अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥१८॥

हे अग्नि! हमें सन्मार्ग से परम धन (परमानन्द, आत्मानन्द, मुक्ति) की ओर ले चल! तू सब-कुछ जानने वाला है। तू हमारे पाखण्डपूर्ण पापों को नष्ट कर दे। हम तुझे अनेक नमस्कार करते हैं।

ब्रह्मचर्य-साधना :

वर्तमानकालीन अधःपतन

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

पुरुष के समक्ष एक महान् भ्रान्ति है। वह नारी के रूप में उसको उद्विग्न करती है। इसी प्रकार स्त्री-जाति के समक्ष भी एक महान् भ्रान्ति है जो पुरुष के रूप में उसको उद्विग्न करती है।

आप ऐम्सटर्डम, लन्दन अथवा न्यूयार्क कहीं भी जायें, इस प्रातिभासिक विश्व का विश्लेषण करने पर आपको केवल दो ही पदार्थ उपलब्ध होंगेह्नह्न कामुकता तथा अहंकार।

नैसर्गिक काम-प्रवृत्ति मानव-जीवन में सर्वाधिक महान् आग्रही माँग है। काम-ऊर्जा अथवा काम-वासना मानव में सर्वाधिक बद्धमूल नैसर्गिक प्रवृत्ति है। काम-ऊर्जा मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियों तथा समस्त शरीर को सम्पूर्णतः आपूरित करती है। यह मानव-प्राणी के संघटक तत्त्वों में प्राचीनतम तत्त्व है।

व्यक्ति में सहस्राधिक कामनाएँ होती हैं; किन्तु उनमें प्रमुख तथा सबल कामना है सम्भोग की कामना। मूलभूत कामना है पति अथवा पत्नी के रूप में एक साथी के लिए आग्रही माँग। सभी इतर कामनाएँ इस एक प्रमुख मूलभूत कामना पर आश्रित होती हैं। धन की कामना, पुत्र की कामना, सम्पत्ति की कामना, घर की कामना, पशु की कामना तथा अन्य कामनाएँ इसकी ही अनुवर्ती हैं।

क्योंकि इस ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण रचना को बनाये रखना है, अतः विधाता ने सम्भोग की कामना को अत्यधिक बलवती बनाया है। अन्यथा, विश्वविद्यालयों के स्नातकों की भाँति ही अनेक जीवन्मुक्त अनायास ही प्रकट हो गये होते। विश्वविद्यालय की उपाधियाँ प्राप्त करना सुकर है। इसके लिए किंचित् धन, स्मरण-शक्ति, बुद्धि तथा अल्प आयास अपेक्षित हैं। किन्तु काम-आवेग को नष्ट करना एक अति-श्रमसाध्य कार्य है। जिस व्यक्ति ने कामुकता का पूर्णतया उन्मूलन कर डाला है तथा जो मानसिक ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित हो चुका है, वह व्यक्ति साक्षात् ब्रह्म अथवा भगवान् है।

यह संसार कामुकता तथा अहंकार ही है, अन्य कुछ नहीं। इनमें अहंकार ही मुख्य वस्तु है। यही आधार है। कामुकता तो अहंकार पर आश्रित है। यदि 'मैं कौन हूँ' के अनुसन्धान अथवा विचार द्वारा अहंकार को नष्ट कर दिया जाये, तो काम-भाव स्वतः ही पलायन कर जाता है। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं स्वामी है। उसने अपने दिव्य गौरव को खो दिया है तथा अविद्या के कारण कामुकता और अहंकार के हाथों का यन्त्र तथा उनका दास बन गया है। कामुकता तथा अहंकार अविद्याजात हैं। आत्मज्ञानोदय आत्मा के इन दोनों शत्रुओं को, असहाय, अज्ञानी, क्षुद्र मिथ्या जीव अथवा भ्रामक अहं को लूट रहे इन दो दस्युओं को विनष्ट कर डालता है।

काम-वासना की कठपुतली बन कर मनुष्य ने अपने को बहुत बड़ी मात्रा में अधःपतित कर डाला है।

हन्त! वह एक अनुकरणशील यन्त्र बन चुका है। उसने अपनी विवेक-शक्ति खो दी है। वह निकृष्टतम रूप की दासता के गर्त में जा गिरा है। क्या ही दुःखद अवस्था है! निःसन्देह, क्या ही शोचनीय दुर्गति है! यदि वह अपनी खोयी हुई दिव्यावस्था तथा ब्राह्म-महिमा को पुनः प्राप्त करना चाहता है, तो उसकी समग्र सत्ता का रूपान्तरण करना चाहिए, उसकी काम-वासना को उदात्त दिव्य विचारों तथा नियमित ध्यान द्वारा पूर्णतया रूपान्तरित करना चाहिए। काम-वासना का रूपान्तरण नित्य-सुख की प्राप्ति की एक बहुत ही प्रबल, प्रभावशाली तथा सन्तोषप्रद विधि है।

(अनूदित)

केवल भगवान् का ही चिन्तन

आप सबके लिए मनन करने का आवश्यक तत्त्व यह है कि समय उड़ता जा रहा है। दिवस सप्ताह में बदल रहे हैं, सप्ताह महीनों में, महीने वर्षों में। एक-एक दिन करके हमारी जीवन-अवधि घटती जा रही है; विभिन्न विकर्षण हमारे मन को लक्ष्य से दूर ले जाते हैं। आप कैसे यह अपेक्षा रखते हैं कि आपका जीवन ईश्वर-साक्षात्कार से अभिषिक्त होगा? प्रबोधन से, मोक्ष से, आनन्द से, शान्ति से और परिपूर्णता से अलंकृत होगा? कैसे यह आशा रखते हैं?

यह केवल तभी सम्भव है जब व्यक्ति निरन्तर भगवान् का, केवल भगवान् का ही चिन्तन करता है, जब व्यक्ति भगवान् के अतिरिक्त अन्य सब विचारों को छोड़ कर केवल मात्र भगवान् का ही चिन्तन करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए हम लगभग कह सकते हैं कि यदि भगवान् का अनुग्रह भी है तो, ईश्वरानुभति की प्राप्ति इसी जन्म में, बल्कि अभी और यहीं निश्चित है।

क्योंकि, जो व्यक्ति अपना मन, अपनी अन्तर्दृष्टि निरन्तर अबाध रूप से भगवान् और केवल भगवान् पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रखता है, जो अन्य किसी भी विचार को प्रवेश नहीं होने देता, जो पूर्णतया ईश्वर में स्थित है, शत-प्रति-शत, किसी भी अन्य विचार को हस्तक्षेप नहीं करने देताह्नह्नतब ऐसे व्यक्ति का अन्तःकरण स्वयं भगवान् ही हो जाता है। क्योंकि ऐसे व्यक्ति में भगवान् निवास करते हैं, वे उसके अन्तर्मन को, उसकी चेतना को पूर्णतया भर देते हैं। तब वह व्यक्ति ईश्वरीय चेतना की स्थिति में पहुँच जाता हैह्नह्नवह तब मानवीय चेतना में नहीं रहता।

ऐसी स्थिति के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। इसके लिए हमें अथक प्रयत्न करना चाहिए। विनम्रता सहित, बिना अहंकार केह्नह्नयह जानते हुए कि यह प्रयत्न भी उन्हीं के द्वारा प्रेरित है, उन्हीं की कृपा की शक्ति से हो रहा हैह्नह्नयहाँ मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक वही सब-कुछ है। और हम उस सर्वशक्तिमान् से, उस सर्वातीत सत्ता से प्रार्थना करते हैं, हम परम पावन गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि वे यह आशीर्वाद और वरदान कृपापूर्वक आपमें से प्रत्येक को प्रदान करें! ऐसा ही हो!

स्वामी चिदानन्द

किस प्रकाश के द्वारा चैतन्य को जाना जाता है?

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

प्राचीन काल में आपके पूर्वज एक महान्, असाधारण और विचित्र खोज के लिए निकले, एक अज्ञात, अदृश्य की खोज के लिए; यह सब, जो द्रष्टव्य है और जो-कुछ हमें ज्ञात है, इसके पीछे और परे जो-कुछ छिपा हुआ और गुप्त है, जो देखा और जाना नहीं जाता, उसकी खोज। कुछ ऐसे की खोज में वे निकले जो उन्हें स्वयं ही ज्ञात नहीं कि क्या है, और है भी या नहीं।

जिसके अस्तित्व के सम्बन्ध में ही निश्चय नहीं, उसकी खोज की क्या आवश्यकता थी? आवश्यकता इसलिए थी कि उन्होंने यह जान लिया था कि जो-कुछ दिखायी देता है, जो-कुछ इन्द्रियों द्वारा अनुभव में आता है, वह सब अस्थायी, परिवर्तनीय, अस्थिर, नाशवान् और नष्टप्राय है। उन्होंने देखा कि प्रत्येक दिखायी देने वाली वस्तु विनाशशील और प्रवाहशील है। उन्होंने यह भी देखा कि प्रत्येक वस्तु आदि-अन्तवान् है, देश-काल की सीमाओं में आबद्ध है और अपनी परिवर्तनशील प्रकृति के कारण विश्वसनीय नहीं है।

उन्हें लगा कि यह असन्तोषजनक है। अत: उन्होंने जानना चाहा कि 'क्या कोई ऐसी वस्तु है जो स्थायी हो? क्या कुछ ऐसा है जो अपरिवर्तनीय है, अनश्वर है और शाश्वत है?' अत: इस प्रकार उनकी यह अदृश्य अन्त:साम्राज्य की एक ऐसी खोज प्रारम्भ हो गयी जो उनके लिए भी अद्भुत ही थी और अपनी इस खोज में वह उस महान् अद्भुत अन्वेषण के उद्घाटक बन गये। उन्होंने अन्वेषण किया कि सचमुच ही एक ऐसी वस्तु है, जैसी कि वह खोज रहे हैं, जो आदि रहित, अन्त रहित, परिवर्तन रहित, अनश्वर, स्थायी, देश-काल से परे शाश्वत और अनन्त है।

उसको उन्होंने वास्तविक परम सत्ता उद्घोषित कर दिया, '**ॐ तत् सत्**', नाशवान् से परे अनश्वर, दृश्य जगत् के पीछे और परे अदृश्य सत्ता कहा; जो-कुछ भी नष्टप्राय, विनाशशील और समाप्त हो जाने वाला है, उस सबसे अतीत अविनाशी, अनश्वर कहा। क्योंकि यह ज्ञान और प्रकाश की अवस्था थी, अत: उन्होंने इसे समस्त अन्धकारों से परे, ज्योतियों की परम ज्योति कहा। यह कारण-विहीन कारण, स्रोत-विहीन स्रोत, शाश्वत मूल स्रोत था।

यह खोज और यह अनुभूति वह आने वाली पीढ़ियों के लिए, सदा के लिए छोड़ गये और इसका प्रकाश कभी मन्द नहीं हुआ, क्योंकि यह शाश्वत प्रकाश है। यही है जिसने हमारे आज के विश्व में, जो-कुछ भी उदात्त, उत्कृष्ट, परिशुद्ध, श्रेष्ठ, पावन और पवित्र है, उस सबको धारण किया हुआ है। यह सार-हीन और सत्त्व-हीन मानवीय सत्ता, जो जन्म, मरण, वृद्धावस्था, रोग, विनाश, घृणा, हिंसा, अधर्म, अन्याय, असत्य, छल-कपट और अनेकों अवगुणों से भरपूर है, उसका वास्तविक मूल सत्त्व वह ही है।

आज के अन्धकार ग्रसित मानव-जगत् में यह समस्त प्रकाशों के प्रकाश के रूप में आलोकित है, और आप वह प्रकाश हैं। आपका जीवन, आपका मनुष्य-जन्म एक दुर्लभ सुअवसर है कि आप इस अन्धकार से बाहर, आत्म-जागरूकता के उज्ज्वल प्रकाश में आयें, उस देदीप्यमान प्रकाश की अनुभूति में आयें जो कि आप स्वयं ही हैं।

बहुत प्राचीन काल की बात है, इस प्रकाश के मार्ग को हमें एक-एक पग करके दिखाने के उद्देश्य से एक गुरु ने अपने शिष्य से प्रश्न कियाह्नह्न ''प्रिय शिष्य, यहाँ दिखायी देने वाली समस्त वस्तुएँ किस प्रकाश से दिखायी देती ?'' ''गुरुदेव! यह सूर्य का प्रकाश है।'' ''प्रिय शिष्य! जब सूर्यास्त हो जाता है, रात घिर आती है, तब किस प्रकाश से सब-कुछ दिखायी देता है?'' ''चन्द्रमा के प्रकाश से गुरुदेव!'' ''जब अमावस की रात होती है और आकाश में चन्द्रमा भी नहीं होता, तब किस प्रकाश से सब-कुछ देखा जाता है?'' ''गुरुदेव! सितारों के प्रकाश से।'' ''बादलों से घिरी अँधियारी वर्षा ऋतु की रात को जब चाँद-सितारे भी नहीं होते, तब वस्तुओं को कैसे जाना जाता है?'' ''अग्नि के प्रकाश के द्वारा, गुरुदेव!''

''और यदि अँधेरी, बादलों से घिरी रात को किसी तहखाने में उतर गये हों तथा तुम्हारे हाथ में प्रकाशित होने वाला दीपक भी वायु के तीव्र झोंके से बुझ गया हो, सब ओर गहन अन्धकार छा गया हो, तब किस प्रकाश के द्वारा तुम्हें ज्ञात होगा कि तुम गर्भगृह में हो और तुम अभी सीढ़ियों से उतरे हो, अथवा चारों ओर दीवारें इत्यादि हैं?'' ''गुरुदेव! इन वस्तु-पदार्थों की पूर्व-स्मृति के द्वारा।''

''प्रिय शिष्य! यह द्रष्टा कौन है, जो स्मृति के द्वारा पहले देखी गयी वस्तुओं का स्मरण करवाता है, जो मन के नेत्रों द्वारा देखने में समर्थ करता है? कौन है वह? किस प्रकाश द्वारा मन के नेत्रों से वस्तुएँ देखी जाती हैं? कौन-सा प्रकाश है जो उस अग्नि को उस समय जागरूक बनाता है जब कुछ भी दिखायी नहीं देता, कुछ भी समझ नहीं आता, कोई नाम, कोई रूप-कुछ भी अशुभ नहीं होता, यद्यपि आँखें खुली होती हैं! वह प्रकाश क्या है?

''यह चेतना का प्रकाश हैह्नह्नएक सत्ता जो उस समय भी सब-कुछ के प्रति जागरूक होती है, जब कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता। उस सत्ता का सार क्या है? यह जागरूकता है, चेतना है। वह ही तुम हो। तुम चेतना का वह प्रकाश हो जिसे जानने के लिए किसी अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह ज्ञान का सत्त्व है। यह परम ज्ञान है और यह अनादि तथा अनन्त है। यह महान् सत्य है, वास्तविकता है, समस्त अन्धकारों से परे जो ज्योतियों की परम ज्योति है। केवल मात्र एक वही सत्य है और तुम वह हो।''

जब हम उस वास्तविक परम सत्ता के बोध से अनभिज्ञता की अवस्था में होते हैं, जब केवल दृश्य जगत् ही हमें सत्य प्रतीत होता है, जब केवल विविधताओं को ही हम वास्तविक मानते हैं, जब वह अदृश्य सत्ता, वह एकमेव, अद्वितीय हमें सत्य अनुभव नहीं होताह्नह्नतब अज्ञान की उस अवस्था में, अध्यात्म की उस अनुभवहीनता मेंह्नह्नसाधकों और आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए यह जानना कि वह कौन-सा प्रकाश है, जिसके द्वारा वह जाना जाता हैह्नह्नयह एक निर्णायक प्रश्न है।

यह एक निर्णायक प्रश्न है, और वह प्रकाश सत्य का प्रकाश है। हाँ, यह सत्य का ही प्रकाश है, जिसके द्वारा वह जाना जाता है। जो सत्यपरायण है, वह उस परम तत्त्व को जानता है। वह प्रकाश, पवित्रता का प्रकाश है। जो व्यक्ति पवित्रता के प्रकाश से आलोकित है, वह उस परम पावन ब्रह्म का ही स्वरूप है, और उस महान् वास्तविकता का ज्ञाता है। वह प्रकाश धर्म का प्रकाश है। जो व्यक्ति धर्म की उपासना करता है, जो धर्म का अनुसरण करने का प्रयास करता है, वह धर्म के प्रकाश द्वारा सत्य की अनुभूति प्राप्त कर लेता है।

अत: सत्य, पवित्रता और धर्म वह देदीप्यमान प्रकाश-दीप है जो साधक को उस दुस्साध्य पथ की ओर ले जाता है, जो अन्ततोगत्वा प्रबोधन की ओर, ज्ञान-सम्पन्नता की ओर, परम अनुभूति की ओर तथा मोक्ष की ओर ले जाता है। इसलिए यही वह प्रकाश है, जिसके द्वारा हमें तब तक अपने जीवन को आलोकित करते जाना चाहिए, जब तक कि हम समस्त अन्धकारों से परे प्रकाशों के परम प्रकाश में समाहित हो जाने के परम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते। यही वह प्रकाश है जो जीवन की दिव्यता को प्रकाशित करता है। यही वह प्रकाश है जो दिव्य जीवन के केन्द्रीय स्थान पर, प्रतिदिन के जीवन में पवित्रता और धर्म के रूप में प्रतिष्ठित है।

हम उस परम सत्ता को श्रद्धापूर्ण प्रणाम करते हैं, हार्दिक धन्यवाद करते हैं, जिसने हमें प्रात:काल का यह सुअवसर प्रदान किया है कि हम इन शाश्वत सत्यों पर मनन कर सकें, जो अन्य सब-कुछ परिवर्तन हो जाने पर कभी परिवर्तित नहीं होते। वे शाश्वत मूल्य हैं तथा इस धरती पर सदैव परिवर्तनशील इस मानव-जीवन में, इस सर्वदा परिवर्तित होते दृश्य जगत् में, ये शाश्वत मूल्य सदा-सर्वदा अपरिवर्तित एकरूपता से लागू होते हैं। हम इस सत्य पर मनन करके स्वयं को धन्य बनायें। **(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)**

> दिव्य कृपा और गुरुदेव के चयनित आशीर्वादों से आपकी कामनाओं की पूर्ति हो, आपके जीवन के परम लक्ष्य की पूर्णरूपेण प्राप्ति हो, ताकि आप यहाँ इसी जीवन में, इसी शरीर में मुक्त प्राणी हो जायेंह्लह्लआप ऐसे व्यक्ति बन जायें जिसके लिए दु:ख, कष्ट और भ्रान्तियाँ अजनबी हों, उनका कोई अर्थ न रहे। बन्धन का कोई अर्थ न रहे। मृत्यु का कोई अर्थ न रहे। यही लक्ष्य है, यही उद्देश्य है। इस प्रकार आप ज्ञान के प्रकाश की अवस्था में और अपने शाश्वत स्वरूप की जागरूकता में स्थित हो जायें।
>
> धर्मग्रन्थों में इसकी सम्भावना को बार-बार दोहराया और घोषित किया गया है। इसी जन्म में मुक्त होना, जीवन्मुक्त हो जानाह्लह्लयह परम लक्ष्य है। क्या यह सम्भव है? हम इसका सीधा उत्तर नहीं दे सकते, किन्तु यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यह असम्भव नहीं है। इतना आश्वासन पर्याप्त है। इसका अर्थ है कि यह सम्भव तो है, किन्तु निश्चित रूप से इतना सरल नहीं है जितना कि कोई मिष्टान्न खा लेना। खाना आसान हो सकता है, किन्तु उसे तैयार करने में परिश्रम की आवश्यकता होती है।
>
> सभी महान् व्यक्तियों ने इसे स्वयं प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया है कि मोक्ष सम्भव है, और उसके उपरान्त उन्होंने उद्घोषित किया है कि मोक्ष सम्भव है। जो एक ने प्राप्त कर लिया, उसे सभी प्राप्त कर सकते हैं। आप इसी के लिए बनाये गये हैं।
>
> **स्वामी चिदानन्द**

पूर्व-अंक का शेष :

सर्वव्याप्त वैश्वानर

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

क्योंकि आप संसार को समझ नहीं पाते और संसार के साथ व्यवहार में भी आपका ज्ञान युक्त नहीं है, तो संसार भी आपसे विमुख होने लगेगा। यही विमुखता अथवा संसार का आपके प्रति परावर्तन ही कर्म का कार्य रूप है। संसार के साथ आपका व्यवहार यदि एक कर्म है, तो संसार का परावर्तन उस कर्म का कार्य है।

संसार की वास्तविक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए यदि आप अनुकूल व्यवहार करेंगे, तो परिणाम भी अनुकूल ही होगा। किन्तु आपका निर्णय संसार के प्रति विवेकपूर्ण नहीं होता। किसी सूक्ष्म इच्छा-पूर्ति हेतु स्वार्थवश आप साधन रूप में संसार का प्रयोग करना चाहते हैं। अपनी सन्तुष्टि के लिए इसे साधन बनाना कहाँ तक उचित है? यदि हम ऐसा करेंगे, तो परिणाम भी वैसा ही पायेंगे। 'जैसे को तैसा' (tit for tat) दूसरों के साथ आप जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही वे आपके साथ करेंगे।

स्वयं को संसार का ऐसा केन्द्र मत बनायें कि संसार आपकी सेवा करे। ऐसा नहीं हो सकता कि हम तो सदा मालिक बने रहें और संसार हमारा सेवक। यदि उत्कृष्टता का यह भाव हम अपने मन में रखेंगे, तो संसार भी हमारे साथ वैसा व्यवहार रखते हुए हमारे साथ सेवक-जैसा ही व्यवहार करेगा, जब-तब हमें ठोकर मारेगा और न केवल इस जन्म में प्रत्युत आगामी जन्मों की शृंखला में वह हमें दुःख देगा। यही है संसार, जिसमें हम फँसे हुए हैं। यही है जीव का बहिष्प्रज्ञत्व और उसका परिणाम!

ईश्वर का बहिष्प्रज्ञत्व मुक्त अवस्था है। यह सम काल में युगपत् रूप से (simultaneously) सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति सचेत है, जब कि हम यहाँ क्रम से केवल कुछ ही वस्तुओं के प्रति सचेत हैं। एक ही समय में हम दो वस्तुओं का भी चिन्तन नहीं कर सकते, पुनः एक ही काल में समस्त वस्तुओं के चिन्तन की तो बात ही क्या है?

विराट् की चेतना युगपत् (simultaneously) ही सत् भी है अर्थात् वह सत्-चित् एक ही समय है; इसीलिए यह सर्वज्ञत्व है। जीव की चेतना क्रमिक है, एक के पश्चात् एक का अतिक्रमण करके आगे बढ़ने वाली है; इसलिए सर्वस्व बोध करने में अक्षम है। यह अल्पज्ञ है। विराट् सर्वव्यापक अन्तर्यामी है, जब कि जीव एकदेशिक है। हम एक ही समय में दो स्थान नहीं घेर सकते, जब कि विराट् एक ही समय में सर्वत्र व्याप्त है। विराट् सर्वशक्तिमान् है; क्योंकि प्रत्येक वस्तु के साथ उसका युगपत् सम्पर्क है। जीव अल्प शक्तिमान् है, उसके पास कोई शक्ति नहीं है; क्योंकि वह वस्तुओं से असम्बद्ध है।

विराट् की शक्ति हाथों से ग्रहण करने वाली नहीं है, वह तो सबमें अन्तर्भाव (immanent) की शक्ति है। उसका ज्ञान अन्तर्दृष्टि से है, बाह्यता का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं है। विराट् का ज्ञान अथवा विराट् की चेतना

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सहजावबोध (सहज ज्ञान) है, जब कि जैविक चेतना जाग्रत अवस्था में विषयों के प्रति इन्द्रियजन्य बोध है। यह अन्तरस्थ भाव नहीं है।

हमारे पास पदार्थों का ज्ञान, परिचय नहीं है और न ही हमारे पास विषयों का अन्तर्ज्ञान है। इस कारण से पदार्थों पर हमारा आधिपत्य नहीं है। हमारी इच्छा-शक्ति भी दुर्बल है और शरीर भी दुर्बल है। इसी दुर्बलता के कारण हम इच्छा तो करते हैं; किन्तु इच्छाएँ पूर्ण नहीं कर सकते।

हमारी इच्छाएँ हमारी दुर्बलता हैं, जब कि विराट् का इच्छा रहित होना ही उसकी शक्ति है। अधिक आपकी कामनाएँ़़अधिक आप शक्तिहीन। कामनाएँ अल्प, तो शक्ति अधिक। इस प्रकार कामना रहित होने की सर्वोच्च अवस्था ही विराट् अथवा वैश्वानर है। यहीं पर जीव स्वयं को ईश्वर में रूपान्तरित करता है और विषय-चिन्तन त्याग देता है तथा किसी से घृणा नहीं करता। माण्डूक्योपनिषद् का यह मन्त्र आत्मा के प्रथम पाद की व्याख्या है, जो जाग्रत अवस्था से सम्बद्ध चेतना के परीक्षण की प्रथमावस्था है़़व्यष्टि रूप से भी और समष्टि रूप से भी, जिसे हम क्रमशः विश्व और वैश्वानर अथवा जीव और विराट् कहते हैं।

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बालकों के लिए दिव्य जीवन :

अपराधी अन्त:करण अपनी छाया से डरता है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक : गोपाल, तुम्हारे पर्चे कैसे हुए हैं?

गोपाल : मैंने जो लिखा है, उससे मुझे पूरा सन्तोष है। अँगरेजी का पर्चा जरूर कुछ कठिन था, लेकिन मैंने सभी प्रश्नों के उत्तर लिखे हैं। गणित के दश में से सभी सवाल मैंने ठीक-ठीक किये हैं। हिन्दी में ७५ प्रतिशत अंक निश्चित ही मिलेंगे। कुल मिला कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की आशा है और ईश्वर ने चाहा तो आगे छात्र-वृत्ति भी पा सकता हूँ। परीक्षा-भवन में जो शिक्षक हमारे साथ थे, उनको भी मेरी उज्ज्वल सफलता पर विश्वास है।

शिक्षक : बहुत सुन्दर। परीक्षा-फल कब प्रकाशित होगा? अपने सभी साथियों को शानदार दावत दोगे न?

गोपाल : निश्चय ही गुरु जी। मैं अपने सभी शिक्षक और सहपाठियों को वनभोज (पिकनिक) के लिए ले जाऊँगा।

शिक्षक : बढ़िया विचार है।

कृष्ण : गुरु जी, परसों परीक्षा-भवन में एक बड़ी खेदजनक घटना हो गयी। आप सुनेंगे, तो दु:खी होंगे।

शिक्षक : क्यों, किसी छात्र को परीक्षा-भवन से निकाल दिया गया क्या?

कृष्ण : जी हाँ, बात यह है कि एक लड़का अपने साथ कुछ कागज लाया था, जिसमें कुछ उन प्रश्नों के उत्तर लिखे थे, जिनके बारे में उसका ख्याल था कि उस दिन के प्रश्न-पत्र में जरूर पूछे गये होंगे। डेस्क के नीचे छिपाये हुए उन कागजों से वह उत्तर नकल करने में व्यस्त था। एकाएक परीक्षा-निरीक्षक ने कहा कि कोई खुले कागज अपने साथ डेस्क पर या डैस्क के नीचे न रखे। लड़का यह सोच कर घबरा गया और परेशान हो गया कि निरीक्षक ने उसे नकल करते देख लिया होगा। अपनी जेब में उन कागजों को छिपा लेने के लिए वह फौरन उन्हें मोड़ने लगा। सहायक निरीक्षक ने, जो कि कुछ दूर पर खड़े थे, उसकी यह हरकत देख ली और उसे रँगे हाथों पकड़ लिया। तुरन्त ही उस लड़के को परीक्षा-भवन से निकाल दिया गया।

शिक्षक : कितनी मुसीबत है! बच्चो, क्या बता सकते हो कि उसका अन्त:करण किस प्रकार का था? जो जानता हो, हाथ ऊँचा करे।

कृष्ण : गुरु जी, मैं जानता हूँ, पर वह शब्द भूल रहा हूँ। मैं सोच कर अभी बताता हूँ।

(मिनट-भर सोच कर बताता है।)

उसका अपराधी अन्त:करण था। ठीक है न, गुरु जी?

शिक्षक : बिलकुल ठीक। तुमने यह कहावत सुनी होगीह्नह्न'अपराधी अन्त:करण अपनी छाया से भी डरता है।'

मैं चाहता हूँ कि तुम सब इस बात को ठीक-ठीक समझ लो। इन दिनों लड़के कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते। वे सफलता पाने का आसान रास्ता खोजते हैं और इसके लिए हर सम्भव गलत कदम उठाने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह बहुत बुरी मनोवृत्ति है। ध्यान रखोह्ह‘अशुद्ध साधनों से प्राप्त की गयी सफलता सफलता नहीं है।’ महात्मा गान्धी ने कहाह्ह‘‘अशुद्ध और गलत साधनों से सफलता प्राप्त करने के बजाय लक्ष्य को न प्राप्त करना उत्तम है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में या काम में सफलता पाना चाहते हो, तो उसका साधन शुद्ध और सही ही होना चाहिए, गलत नहीं। तभी यह कहा जा सकता है कि तुमने वास्तविक सफलता पायी है। इसी प्रकार जो सम्पत्ति हम अशुद्ध साधनों से उपार्जन करते हैं, उसके साथ कई मुसीबतें भी लगी रहती हैं; परन्तु वही यदि शुद्ध साधनों से कमायें, तो उससे हम सुखी होंगे और हमारा भाग्य चमकेगा।’’

ऐसे सब प्रसंगों से तुम लोगों की आँख खुलनी चाहिए। एक विनोद-कथा के द्वारा पूर्वोक्त कहावत का अर्थ स्पष्ट करता हूँ।

एक धनी ब्राह्मण था। उसके पास कई नौकर थे। एक दिन उसका चाँदी का लोटा खो गया। उसे अपने नौकरों पर शक हुआ, लेकिन वह पता नहीं लगा सका कि किसने चोरी की है। अन्त में उसने एक उपाय सोचा। उसने अपने सभी नौकरों को बुला भेजा। सबके हाथ में एक-एक लकड़ी दे दी और कहाह्ह‘‘लकड़ियाँ बिलकुल एक-सी हैं। प्रत्येक लकड़ी एक-एक गज लम्बी है। लेकिन कल प्रात: चोर नौकर की लकड़ी एक इंच बढ़ जायेगी।’’

सब अपने-अपने स्थानों को लौट गये। जिसने चोरी की थी, वह सारी रात सोचता रहाह्ह‘‘यह मालिक बड़ा बुद्धिमान् है। मेरी लकड़ी एक इंच लम्बी हो जायेगी और मैं पकड़ा जाऊँगा। क्यों न मैं एक इंच लकड़ी काट कर फेंक दूँ।’’ उसने ऐसा ही किया। अगले दिन प्रात: मालिक ने सबको बुलाया और अपनी-अपनी लकड़ी दिखाने को कहा। उसने देखा कि एक लकड़ी बाकी लकड़ियों से छोटी है। इस प्रकार उस छोटी लकड़ी वाला नौकर चोर साबित हुआ। ब्राह्मण को चाँदी का लोटा वापस मिल गया और अपराधी नौकर निकाल दिया गया।

गोपाल : गुरु जी, ऐसी ही अपराधी मनोवृत्ति की एक घटना मैं सुनाऊँ?

शिक्षक : जरूर सुनाओ।

गोपाल : एक शहर में कपास का एक व्यापारी रहता था। वह बड़ा धनी था। उसके पास कपास का बहुत बड़ा स्टाक था। एक रात चोरों ने उसमें से एक गट्ठर चुरा लिया। चोरों को पकड़ने की उसने खूब कोशिश की, लेकिन पकड़ न सका।

एक बूढ़े ने उस व्यापारी से कहाह्ह‘‘अपने लोगों को एक भोज दो। मैं चोर को पकड़ लूँगा।’’ व्यापारी ने ऐसा ही किया। जब सब लोग भोजन कर रहे थे, तब वह बूढ़ा जोर से चिल्लायाह्ह‘‘चोरों की दाढ़ी में अभी तक कपास चिपकी हुई है।’’ इस पर जो चोर थे, उनका हाथ अनजाने में अपनी-अपनी दाढ़ी पर चला गया, जिससे कि वे कपास निकाल दें। इस तरह वे पकड़ लिये गये।

शिक्षक : खूब! यह भी बड़ी शिक्षाप्रद कहानी है जो इसी सत्य की ओर संकेत करती है। अपराधी मनोवृत्ति वाला मनुष्य जीवन में कभी सफल नहीं होता, कभी उन्नति नहीं कर सकता। वह साहसी, ईमानदार और निष्कपट नहीं रह सकता।

बच्चो, तुम लोगों ने देखा होगा कि कुछ लोग रेल में बिना टिकट सफर करते हैं। वे जानते हैं कि यदि वे पकड़े गये, तो किराये का दुगना पैसा देना पड़ेगा। बिना टिकट के सफर करने वालों की तुच्छ मानसिक स्थिति अनुभवी लोग समझ सकते हैं। ऐसे लोग बहुत घबराते हैं। उनको हर क्षण चौकन्ना रहना पड़ता है। वे सदा खिड़की से बाहर झाँकते रहते हैं, ताकि देख सकें कि टिकट-चेकर किस डिब्बे से किस डिब्बे में जा रहा है।

अपराधी मनोवृत्ति के कारण वह इस भय से परेशान रहता है कि वह पकड़ा जायेगा और उसे जुर्माना देना पड़ेगा। टिकट-चेकर डिब्बे में घुसता है, तो वह उसकी नजर से बचने के लिए पाखाने में जा छिपता है। कुछ देर के बाद बाहर निकल कर जब वह देखता है कि टिकट-चेकर अभी डिब्बे में मौजूद है, उसे आश्चर्य और निराशा दोनों होते हैं। उससे टिकट माँगा जाता है। वह कुछ नहीं कह पाता। उसे किराया और जुर्मानाह्लह्लदोनों ही देने पड़ते हैं।

तो बच्चो, जो रकम देनी है, उसे देने में कभी मत चूको। दिल साफ रखो। निर्भय और बहादुर रहो।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

एक गुरु और एक मार्ग पर दृढ़ रहिए

प्रकृति में कोई भी दो वृक्ष एक-जैसे नहीं होते, कोई दो पत्ते एक-समान नहीं होते, कोई दो व्यक्ति एक-समान नहीं होते, कोई दो स्पन्दन एक-जैसे नहीं होते, कोई दो स्वभाव एक-समान नहीं होते और न दो मन एक-सरीखे होते हैं। इसलिए विभिन्न स्वभावों के अनुसार प्रत्येक के मन को नियन्त्रित करने के मार्ग भी विभिन्न हैं। प्रत्येक व्यक्ति की साधना का अपना मार्ग होता है। यदि आप अपना मार्ग नहीं खोज पायें, तो गुरु की सहायता से खोज सकते हैं। किसी गुरु के अधीन रह कर योग सीखिए, तभी योग के गूढ़ तत्त्वों को आप समझने के योग्य होंगे। जब आप हताश होंगे, तब वे आपमें स्फूर्ति का संचार करेंगे, आपके मार्ग में आने वाली संशय-रूपी सभी बाधाओं को दूर करेंगे और आपको सही मार्ग दिखायेंगे; क्योंकि वे पहले ही ये सारे मार्ग तय कर चुके होते हैं। यदि आप निष्ठावान् और आस्थावान् हैं, तो आप पर उनकी कृपा तैलधारा की तरह अखण्ड बरसेगी। यदि आपमें सच्ची ग्रहणशीलता, अडिग श्रद्धा तथा उनके प्रति समर्पण-भाव हो, तो वे आपमें शक्ति, प्रेम, ज्ञान और आध्यात्मिक प्रवाह का संचार करेंगे। अब एक गुरु और एक मार्ग पर दृढ़ रहिए। चंचलता त्यागिए, धैर्य रखिए और निष्ठावान् बनिए।

स्वामी शिवानन्द

योग द्वारा स्वास्थ्य :

पश्चिमोत्तानासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

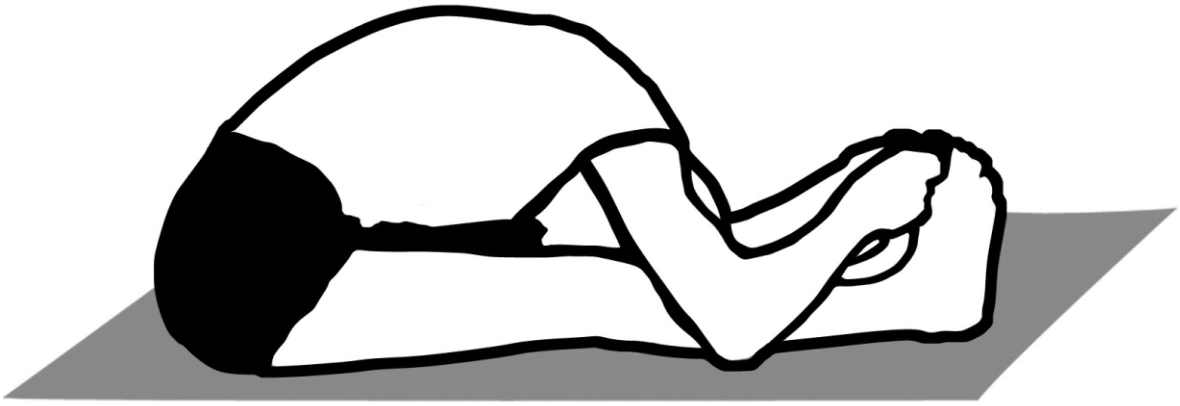

विधि

तह किये हुए कम्बल पर दोनों पैर फैला कर बैठ जायें और दोनों हाथ घुटनों पर रखें। धीरे-धीरे श्वास बाहर निकालें, आगे की ओर झुकें और घुटनों को बिना मोड़े पैर के अँगूठों को पकड़ लें। घुटनों को स्पर्श करने के लिए अपना शिर नीचे को झुकायें। कोहनियों को भूमि पर टिकायें। इस आसन में कुछ सेकण्ड तक टिके रहें। धीरे-धीरे समय की अवधि बढ़ायें। पैरों की उँगलियों को छोड़ दें और श्वास भीतर लेते हुए धीरे-धीरे बैठने वाली स्थिति में आ जायें। कुछ धीमी, गहरी श्वास लें और धीरे-धीरे श्वास निकालें। इस आसन को दो से तीन बार दोहरायें। जब आप इस आसन में हों, तो गहरी श्वास-प्रश्वास भी ले तथा छोड़ सकते हैं।

जब आप प्रवीणता प्राप्त कर लें, तो आप इस आसन में सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ तीन से पाँच मिनट तक सुखपूर्वक रुक सकते हैं। इस आसन में रहने की स्थिति में मेरुदण्ड एवं पीठ की पेशियों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

लाभ

पीठ की अकड़न, पीठ की पेशियों की ऐंठन तथा पीठ की अन्य व्याधियाँ अच्छी हो जाती हैं। मेरुदण्ड का लचीलापन बढ़ जाता है। घुटनों के पश्च भाग की मांसपेशियाँ दृढ़ हो जाती हैं। यह सुस्ती को दूर करता है और वृक्कों तथा उदरीय अंगों को तीव्र करता है। यह मेरुदण्ड को नवजीवन प्रदान करता और पाचन-क्रिया को अधिक बढ़ाता है।

टिप्पणी : अधिकांश अभ्यासकर्ताओं के विषय में बहुत दिनों तक नियमित अभ्यास के द्वारा ही इस आसन में पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। सावधानी रखनी चाहिए कि इसके कारण कटि-प्रदेश पर अत्यधिक तनाव न पड़े।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

बाल-स्तम्भ

अहेतुक प्रेम

स्वामी रामराज्यम्

एक सेठ थे। वह रोज भगवान् की पूजा किया करते थे। उनका एक नियम थाह्ह्प्रतिदिन किसी भूखे को दोपहर का भोजन कराने के बाद ही वह भोजन करते थे। ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ कर लाने का काम उनका सेवक किया करता था। एक दिन सेवक एक बूढ़े को ले कर आया।

सेठ ने उससे कहाह्ह‘‘घर में मन्दिर बना हुआ है। पहले वहाँ जा कर भगवान् के दर्शन कर लें। फिर भोजन के लिए पधारें।’’

व्यक्तिह्ह‘‘दर्शन! आपने तो मुझे भोजन कराने के लिए बुलाया है।’’

सेठह्ह‘‘आप पक्का भोजन लेंगे या कच्चा?’’

व्यक्तिह्ह‘‘कोई भी भोजन दें, लेकिन उसमें अचार और मिठाई जरूर हो।’’

सेठह्ह‘‘भोजन तैयार हो रहा है। तब तक भगवान् की चर्चा करें।’’

व्यक्तिह्ह‘‘पेट में चूहे कूद रहे हैं। पहले पेट में कुछ पड़ने दीजिए।’’

कुछ देर बाद सेवक भोजन की थाली ले आया। उस व्यक्ति ने जल्दी से पहला कौर मुँह में डाला।

सेठह्ह‘‘आपने भगवान् को भोजन अर्पित नहीं किया!’’

व्यक्तिह्ह‘‘बाद में देखा जायेगा। पहले खा लूँ।’’

सेठह्ह‘‘क्या तुम नास्तिक हो?’’

व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने मिठाई की प्लेट अपने नज़दीक खिसकाई और सेवक से बोलाह्ह‘‘एक प्लेट और।’’

सेठ ने सेवक से कहाह्ह‘‘इसके सामने से थाली हटा कर कुत्ते के सामने रख दो।’’

उन्होंने दूसरे सेवक से कहाह्ह‘‘इसे कोठी के फाटक का रास्ता बता दो।’’

रात को भगवान् ने सपने में सेठ से कहाह्ह‘‘जिस व्यक्ति को तुमने घर से निकाल दिया था, वह नास्तिक है। मैं उसे साठ सालों सेह्ह्जब से उसने जन्म लिया हैह्ह्भोजन दे रहा हूँ और वह सब दे रहा हूँ, जो उसके भरण-पोषण के लिए जरूरी है। तुम उसे एक समय का भी भोजन नहीं दे सकते थे ?’’

बच्चो, भगवान् सबसे प्रेम करते हैं। वह आस्तिक और नास्तिक, अच्छे और बुरे, डाकू और सन्तह्ह्सभी से प्रेम करते हैं। उनके प्रेम के पीछे कोई कारण नहीं होता। वह यह नहीं सोचतेह्ह्अमुक मेरी सत्ता में विश्वास रखता है या अमुक बहुत अच्छा है, इस कारण मैं उससे प्रेम करूँगा। इसको अहेतुक प्रेम

कहते हैं। इस प्रेम के वश हो कर वह सबका लालन-पालन करते हैं।

तुमको भी दूसरों से ऐसा ही प्रेम करना चाहिए। तुम्हारा प्रेम अकारण (अहेतुक) होना चाहिए। कोई भी कारण (जैसे, कोई तुम्हें अच्छा मानता है, या कोई तुम्हारी प्रशंसा करता है) तुम्हारे प्रेम के साथ जुड़ा हुआ नहीं होना चाहिए।

ऐसे अहेतुक प्रेम में दूसरे के मन की दुर्भावना को सद्भावना में बदल देने की शक्ति होती है। ऐसा प्रेम करने से भगवान् बहुत प्रसन्न होते हैं।

अपने जीवन के द्वारा भगवान् की महिमा और महानता की अभिव्यक्ति

गुरु महाराज एक अन्य संक्षिप्त सन्देश में कहते हैं कि जब साधकों का प्रारम्भिक उत्साह और अनुमान ढीला पड़ जाता है और अपने आध्यात्मिक जीवन में उन्हें लगने लगता है कि हमारी कुछ भी उन्नति नहीं हो रही है, हम न इधर के रहे न उधर ही पहुँच पाये, बस बीच में ही फँसे रह गये हैं; तब मैं उनसे हमेशा यही कहा करता हूँह्लह्ल‘‘यह सब आपको सिर्फ इसलिए लग रहा है, क्योंकि आपने यह गलत दृष्टिकोण अपना लिया है कि हम यहाँ ईश्वर-साक्षात्कार करने आये हैं, इसलिए हमने कुछ करना है, एक दूर का लक्ष्य है, जिसे प्राप्त करना है, इसलिए हमें नित्य ही उठ कर लगे रहना चाहिए। उसी दिशा की ओर आगे और ऊपर बढ़ते रहना चाहिए।

‘‘यह सब तो शुरू-शुरू में संसार में फँसे हुए व्यक्ति को आकर्षित करने के लिए कहा जाता है। किन्तु वास्तव में तो हमें यह जीवन केवल इसलिए मिला है कि यह भगवान् की ओर लगा दिया जाये, उन्हें याद किया जाये, उनकी प्रार्थना की जाये, उनका यशगान किया जाये, उनको महिमान्वित किया जाये। इसके सिवा जीवन का और कोई उद्देश्य नहीं है। और यदि आप ऐसा जीवन जी रहे हैंह्लह्लभगवान् की महिमा का गान करते हुए, निरन्तर उनके ही सम्बन्ध में चिन्तन करते हुए, उनका नाम-स्मरण करते और प्रार्थना करते हुए, और उनकी ही दिव्यता, उनकी परिपूर्णता के ही दर्शन करते हुए जी रहे हैं, तब यह अपने-आपमें जीवन की पूर्ति ही है। आप भगवान् को महिमान्वित करने के लिए यदि निरन्तर उनका स्मरण करते हुए जी रहे हैं, तो आप अपने अस्तित्व को सार्थक कर रहे हैं।

‘‘तब फिर कुछ भी ऐसा प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं बचता, जो आपने प्राप्त नहीं किया है। तब फिर आपका जीवन निरर्थक नहीं गया है। तब तो आपने जीवन सफल कर लिया है। आपको यहाँ इस संसार में भेजने का भगवान् का उद्देश्य पूर्ण हो गया है। आपने अपने जीवन में अपने ही जीवन के द्वारा उनकी महिमा और महानता को अभिव्यक्त कर दिया है।’’

स्वामी चिदानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

शिवानन्द होम द्वारा सेवा-शुश्रूषा

''यह हमारा अहोभाग्य है कि हमें दानी बनने का यह मौका मिलता है क्योंकि इसी से हमारा विकास होता है। गरीब बहुत तकलीफ उठाता है ताकि वह हमको आराम पहुँचा सके। अतः दानदाता को उसको झुक कर प्रणाम करना चाहिए तथा उसका धन्यवाद करना चाहिए। दान प्राप्तकर्ता को खड़े हो कर उसे आज्ञा देनी चाहिए।'' (स्वामी विवेकानन्द)

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय को तपोवन लक्ष्मणझूला में स्थित शिवानन्द होम के माध्यम से एक छोटी-सी सेवा करने का सुअवसर मिलने पर अपने को अहोभाग्य समझना चाहिए। यह चिकित्सा केन्द्र है जिसमें रोगी अनाथ लोगों के लिए घर जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इन लोगों ने वास्तव में इस भौतिक जगत् में सब-कुछ खो दिया है। अपने घर से निकाले हुए हैं चाहे कारण कुछ भी हो। इनको प्रताड़ित किया गया है, अपमानित तिरस्कृत किया गया है। समाज में इनको दबाया गया है, इनकी बेइज्जत की गयी है। इनका उपहास किया गया है। इनके शरीर जर्जर हो चुके हैं। इनके आँसू भी अब सूख चुके हैं। मन में पूर्ण व्यग्रता है। बहुत बड़ा तूफान है। अपने इस विपत्तिरूपी अन्धकार में अकेले पड़ जाने से इनको बड़ी व्यथा सता रही है। सभी इनको भूल गये हैं।

यह ऐसा मेडिकल सेंटर है, जहाँ इनको गम्भीर व सुदीर्घ बीमारियों में मेडिकल सहायता दी जाती है तथा जब तक ये बीमारी से ठीक नहीं हो जाते हैं तब तक इनका यहाँ इलाज किया जाता है तथा उचित तीमारदारी, देख-रेख की जाती है। जिनको यहाँ लम्बे समय तक रखने की आवश्यकता होती है उनको पुनर्वास की सुविधा, घर जैसा सुरक्षित वातावरण तथा लम्बे समय तक इनका इलाज किया जाता है।

ऐसा कभी-कभी ही नहीं बल्कि सामान्यतया प्रायः गम्भीर रोगी को आश्रम परिसर से यहाँ लाया जाता है जिसकी बीमारी इतनी गम्भीर अवस्था में होती है कि उसका इलाज सम्भव नहीं होता है। ऐसी ही गम्भीर अवस्था में यहाँ गत-मास एक बूढ़े बाबा को भर्ती किया गया जिसको लिवर (यकृत) सिरहोसिस की बीमारी थी जो साँस लेने में हाँफता था। उसको आक्सीजन दी गयी तथा उसका उपचार किया गया। बीमारी के लक्षण थोड़े कम हुए। दो दिन बाद उसको गंगा जल दिया गया। वह शान्तिपूर्वक इस संसार से चल दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि उसकी आत्मा परम शान्ति तथा परमानन्द को प्राप्त करे! ॐ श्री साईनाथाय नमः।

लगभग इसी समय एक दूसरे रोगी को भर्ती किया गया जो फेफड़े की टी. बी. (क्षयरोग) से ग्रस्त

था। उसे बवासीर की बीमारी भी थी। उसके गुदाद्वार की आँतें बाहर निकल चुकी थीं तथा उसमें घाव हो गये थे, कीड़े पड़ गये थे। इतने गम्भीर घावों के कारण जनरल अस्पताल में उसको भर्ती नहीं किया गया। गंगा माता के किनारे बड़ी दुर्दशा में पड़ा हुआ था। अपने मल-मूत्र में सना हुआ था। वह अपने पेशाब व मल को नियन्त्रण में नहीं कर सकता था। जोर-जोर से कराह रहा था। आहत था। काँप रहा था। भगवान् व गुरुदेव की कृपा से उसके आहत दिल को सान्त्वना मिली। जब एक ब्रह्मचारी ने उसको वहाँ देखा वह उसको यहाँ ले आया और होम में भर्ती कराया। चिकित्सा/इलाज से दिन-प्रतिदिन उसकी अवस्था में सुधार हो रहा है। उसके घावों की मरहम-पट्टी हो रही है तथा घावों की साफ-सफाई, घावों की मरहम-पट्टी एवं उपचार चल रहा है। अब यह सज्जन बहुत सन्तुष्ट व सुखी है। निश्चिन्त है। उसकी झेंप मिट गयी है तथा उसमें आत्मसम्मान दिखायी दे रहा है। अब वह मन, शरीर तथा आत्मा के वैद्य की (डाक्टर आफ माइन्ड, वाडी एन्ड सोल) प्रशंसा एवं गुणगान कर रहा है जिसने उसकी आवाज सुनी, उसको बचाया, अपने गले लगाया और जो अब अपने प्रेमास्पद दिव्य स्पर्श से उसको ठीक कर रहा है।

ॐ श्री सद्‌गुरुदेवाय नमः। ॐ श्री शिवानन्दाय नमः।

''भूखे को भोजन दो! नंगे को वस्त्र पहनाओ! रोगी की सेवा करो! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज एवं पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज का सांस्कृतिक भ्रमण

३४ वाँ अखिल आन्ध्र प्रदेश डिवाइन लाइफ सोसायटी का सम्मेलन तिरुमला पर्वत, तिरुपति तीर्थ में २९ जनवरी से ३१ जनवरी २००८ तक आयोजित किया गया। दिव्य जीवन संघ के ट्रस्टी और उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज एवं पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को उक्त सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया था। वे इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् ने महती कृपा कर तीर्थस्थल तिरुमला पर्वत में अस्थान मण्डपम् को सम्मेलन हेतु निःशुल्क उपलब्ध कराया। देवस्थानम् ने सभी प्रतिभागियों को अपने अतिथिगृहों में आवास तथा दोपहर व रात्रि का प्रसाद 'नित्यअन्नदानम्' योजना में निःशुल्क उपलब्ध कराया। सभी प्रतिभागियों ने ३० जनवरी २००८ की रात्रि को भगवान् वेंकटेश्वर के दर्शन किये।

सम्मेलन समिति, सभी प्रतिभागी एवं डिवाइन लाइफ सोसायटी तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् का सम्मेलन के सफल आयोजन में कृपापूर्ण सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

इस त्रिदिवसीय सम्मेलन में ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना-ध्यान, प्रभातफेरी, योगासन के अतिरिक्त ९ बजे पूर्वाह्न से १ बजे अपराह्न तथा ३ बजे अपराह्न से ६ बजे सायं तक प्रवचन/भाषण किये गये।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज एवं श्री स्वामी

वैकुण्ठानन्द जी महाराज ने इस सम्मेलन में प्रमुखालय का प्रतिनिधित्व किया। परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सत्यव्रतानन्द जी, श्री स्वामी रामयोगी जी, श्री स्वामी समुद्रल लक्ष्मणैया, श्री एम. टी. अलवर, श्री च. वेंकटेशेषैया, श्रीमती बोपन्ना अरुणादेवी, श्रीमती सन्ध्यावन्दनम् लक्ष्मीदेवी एवं आन्ध्र प्रदेश के प्रख्यात् विद्वानों ने आध्यात्मिक जीवन, धर्म, गुरुदेव के दर्शन व सन्देश पर व्याख्यान दिये। लगभग ३००० प्रतिभागियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

इस सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण सफलता के लिए हैदराबाद के श्री स्वामी सत्यव्रतानन्द जी महाराज, गूडूर के श्री च. वेंकटेशेषैया, लाइडम के श्री स्वामी रामयोगी जी एवं श्रद्धालु भक्त-समूह ने बहुत परिश्रम किया। यह सम्मेलन आन्ध्र प्रदेश में गुरुदेव के सन्देश के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

आगरा (उत्तर प्रदेश)ः दिसम्बर २००७ की माहावधि में शाखा ने दैनिक कीर्तन, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, हवन तथा प्रति मंगलवार को एक आध्यात्मिक प्रवचन आदि परिचालित किये। दिनांक १६ नवम्बर को निर्धन स्त्रियों को वस्त्र और प्रसाद वितरित हुए।

अहिवारा (छत्तीसगढ़)ः शाखा दैनिक सत्संग तथा एकादशी की तिथियों को विशेष पूजा और महामृत्युंजय मन्त्र जप आयोजित करती है। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती को विशेष सत्संग भी आयोजित हुआ।

बड़कुँआल (उड़ीसा)ः नियमित गतिविधियाँ, जैसे कि द्विवार पूजा, प्रार्थना-स्तोत्र पाठ की प्रभातीय सभा और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम् तथा श्रीमद् भागवत स्वाध्याय सहित सायंकालीन सत्संग के आधिक्य में शाखा ने प्रति गुरुवार और शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजन, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग और चिदानन्द-दिन को अखण्ड संकीर्तन परिचालित किये। दिनांक ९ दिसम्बर मासिक तथा श्री गीता जयन्ती को विशेष श्रीमद् भगवद् गीता पारायण सम्पन्न हुए। ४ समय विशेष पादुका-पूजन और ३ चल-सत्संग भी आयोजित किये गये।

बरबिल् (उड़ीसा)ः शाखा द्वारा स्व-इमारत में प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग और प्रति सोमवार को शाखा के भक्तों के निवास-स्थानों पर चल-सत्संग सम्पन्न हुए। दिसम्बर माहावधि में शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथी औषधालय द्वारा ४७५ मरीजों के निःशुल्क इलाज हुए।

बारिपदा (उड़ीसा)ः शाखा ने प्रति गुरुवार तथा श्री गीता जयन्ती को पादुका-पूजन और मासिक साधना-दिन २ दिसम्बर को परिचालित किये। दिनांक ३, १२ और ३० दिसम्बर को शाखा ने एक कुष्ठरोगियों की संस्था के निवासियों को अन्नदान और अन्य दिनों को औषधियाँ वितरित कीं।

भंजनगर (उड़ीसा)ः नियमित गतिविधियाँहृ‘पौंडर दीज़ ट्रूथ्स’ के स्वाध्याय सहित प्रति रविवार को सत्संग; श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पारायण सहित एकादशी की तिथियों को सत्संग; श्री सुन्दरकाण्ड के पारायण के साथ संक्रान्ति सत्संग। विशेष गतिविधियाँहृ(१) श्री गीता जयन्ती ः पादुका-पूजा, श्रीकृष्ण-पूजा प्रभात में और ५०

भक्तों द्वारा श्रीमद् भगवद् गीता पारायण, हवन और प्रवचन सायंकाल में। (२) कार्तिक माह : दिनांक २६ अक्तूबर से दिनांक १७ नवम्बर पर्यन्त दैनिक चल-सत्संग और सायंकाल में 'विवेक-चूडामणि' पर अध्ययन-वर्ग तथा दिनांक १८ से २४ नवम्बर पर्यन्त प्रभात में श्रीमद् भागवत की पुस्तक में से श्री कपिल गीता। (३) नवरात्रि : प्रभात में 'विवेक-चूडामणि' पर अध्ययन-वर्ग और हरिद्वार के एक सन्तश्री द्वारा सायंकाल में 'देवी भागवत' विषयक प्रवचन।

भिलाई (छत्तीसगढ़): दिनांक ९ को मासिक सत्संग और दिनांक ३० दिसम्बर के विशेष सत्संग में पादुका-पूजन, महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप, भोग इत्यादि। मातृ-सत्संग में प्रति मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा का पाठ, प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र और भगवद् गीता पारायण अनुक्रम में एकादशी की तिथियों को।

बीकानेर (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँह्न दैनिक द्विवार पूजाएँ, श्रीमद् भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित दैनिक सत्संग, दिनांक ४ और २९ दिसम्बर को मातृ-सत्संग, शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजन और भजन-कीर्तन, चिदानन्द-दिन को महामृत्युंजय मन्त्र तथा श्री गायत्री मन्त्र सहित आहुतियों से हवन, दैनिक योगासन-वर्ग, शिवानन्द पुस्तकालय और जरूरतमन्द छात्रों को शिष्यवृत्तियाँ। विशेष गतिविधियाँह्न(१) दिनांक ३ दिसम्बर को महामन्त्र कीर्तन, (२) 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र-कीर्तन श्री विश्वनाथ मन्दिर के प्रतिष्ठा-महोत्सव को, (३) श्री गीता जयन्ती : श्रीमद् भगवद् गीता पारायण और साथ-साथ १८ दिनों पर्यन्त दैनिक रूप से भगवद् गीता के एक अध्याय का पाठ, (४) दिनांक २३ से ३१ दिसम्बर पर्यन्त 'श्री रामायण' का नवाह्न पारायण, (५) श्री दत्तात्रेय जयन्ती को विशेष पूजा, (६) विकलांग और अन्ध जनों की शालाओं में छात्रों को अन्नदान।

छत्रपुर (उड़ीसा): दैनिक सत्संग के अतिरिक्त शाखा ने प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजन, संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। दिनांक २४ अक्तूबर से दिनांक २४ नवम्बर पर्यन्त माह-भर 'श्री रामायण' का पारायण, दिनांक २२ नवम्बर के साप्ताहिक सत्संग में आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी की उदार और पावन उपस्थिति, दिनांक १९ के चल-सत्संग में आदरणीय श्री स्वामी अर्पणानन्द जी की उपस्थिति और आदरणीय श्री स्वामी रामकृपानन्द जी की उपस्थिति में 'रामायण पारायण' का समापन-समारोह।

चिकिति (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक सत्संग; प्रति गुरुवार को चिदानन्द आश्रम में, प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में सत्संग सम्पन्न किये। श्री गीता जयन्ती को आयोजित श्रीमद् भगवद् गीता पारायण में श्री श्री गोपाल कृष्ण सेवाश्रम के बालकों ने भी भाग लिया।

गुड़गाँव (हरियाणा): शाखा द्वारा प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग प्रति सोमवार को मातृ-संकीर्तन और प्रति मंगलवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण आयोजित किये गये। कथा और हवन प्रति एकादशी को, पूर्णिमा को श्री सत्यनारायण कथा और भजन-कीर्तन, प्रति माह के अन्तिम रविवार को अन्नदान इत्यादि अन्य नियमित गतिविधियाँ हैं। दिव्य जीवन शिवानन्द चैरिटेबल स्वास्थ्य केन्द्र ने दो महिनों में ३१६ मरीजों के इलाज किये तथा एक नेत्रयज्ञ आयोजित किया जिसमें ए आई आई एम एस के विशेषज्ञों ने ३०० मरीजों के परीक्षण और ३० मरीजों की शल्यक्रिया सम्पन्न की। आदरणीय श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी की शाखा की भेंट के उपलक्ष्य में एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ। विशेष दीपावली-उत्सव, गोवर्धन-पूजा और उसके अनुगामी दिन को अन्नकूट-प्रसाद का वितरण, दिनांक २ से १० अक्तूबर को रामायण की

नौ-दिवसीय कथा और श्री दुर्गा अष्टमी को यज्ञ इत्यादि अन्य विशेष कार्यक्रम थे।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): शाखा के मातृ-सत्संग प्रति शुक्रवार को, नारायण-सेवा प्रति मंगलवार को, शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा तथा चिदानन्द-दिन को हवन सम्पन्न होते हैं। स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय ने माह में ८०० मरीजों के इलाज किये। दिनांक २५ नवम्बर को आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी का प्रवचन आयोजित किया गया। दीपावली के विशेष सत्संग के पश्चात् ५०० प्रतिभागियों को अन्नकूट के प्रसाद का वितरण हुआ।

जाजपुर रोड (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्नह्न दैनिक पादुका-पूजा, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन को नारायण-सेवा और माह के चतुर्थ रविवार को साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण दिनांक १८ से दिनांक २४ नवम्बर पर्यन्त, (२) गीता जयन्ती कार्यक्रम।

जयपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति गुरुवार को चल-सत्संग आयोजित हुए। शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा, हवन और प्रसाद-सेवन प्रभात में और सत्संग सायंकाल में। दिनांक २९ नवम्बर को आदरणीय श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी की शाखा की मुलाकात पर विशेष सत्संग आयोजित हुआ। परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रमों में प्रभातफेरी, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-सभा, पादुका-पूजा, स्वाध्याय तथा सायंकाल में विशेष सत्संग इत्यादि समाविष्ट थे। दिनांक १८ नवम्बर को 'गीता-यज्ञ' सम्पन्न हुआ। ७० भक्तों की प्रतिभागिता में श्रीमद् भगवद् गीता के प्रत्येक श्लोक के उच्चारण द्वारा आहुतियों के अनुसरण में 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र सम्पुट सहित 'गीता-यज्ञ' सम्पन्न हुआ।

कक्चिं (मणिपुर): शाखा ने द्विवार श्री विश्वनाथ-पूजा, डेढ़ घण्टों की ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा और सान्ध्य-सत्संग परिचालित किये। आदरणीय श्री स्वामी पवित्रानन्द जी शाखा के 'मानव-सेवा आश्रम' में दिनांक २६ अक्तूबर से २ नवम्बर की अवधि में रहे। उनके आगमन पर उन्हें नगर-संकीर्तन-शोभा-यात्रा में ले गये और उसके अनुसरण में सत्संग आयोजित हुआ। दिनांक २७ को आश्रम में और अन्य एक दिनांक २९ को नगर में, इस प्रकार दो विशेष सत्संग सम्पन्न हुए। उन्होंने दैनिक आध्यात्मिक गतिविधियों ह्नह्नजैसे कि प्रभातीय ध्यान, प्रवचन और मार्गदर्शन तथा सान्ध्य-सत्संग का भी परिचालन किया। शाखा ने दिनांक ११ अक्तूबर को विशेष पूजा और भजन-कीर्तन, श्री दुर्गा अष्टमी को श्री दुर्गा-पूजा और दीपावली को विशेष पूजा भी आयोजित की।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग में श्रीमद् भगवद् गीता का स्वाध्याय सम्पन्न होता है। 'श्री गीता जयन्ती' के कार्यक्रमों में पूजा, स्वाध्याय, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम् और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ, प्रवचन इत्यादि दो सभाओं-सत्रों में साढ़े आठ घण्टों पर्यन्त समाविष्ट थे।

लँगथाबाल (मणिपुर): अहिंसायुक्त अन्तर्राष्ट्रीय दिन, गान्धी जयन्ती को मासिक सत्संग रखा गया। अहिंसा विषयक प्रवचनों ने आतंकवाद-ग्रस्त इस प्रदेश को आवश्यक सांत्वन तथा प्रेरणा दी।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने श्रीमद् भागवत का स्वाध्याय तथा श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पाठ के साथ दैनिक एवं प्रति शुक्रवार को श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र पाठ

के साथ सत्संग आयोजित किये। शाखा ने ३९ प्रतिभागियों सहित ४ चल-सत्संग भी सम्पन्न किये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना और ध्यान की २ घण्टों की सभा के उपरान्त शाखा ने प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण सहित मातृ-सत्संग एवं प्रति एकादशी को अनुक्रम से श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम् और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ परिचालित किये। अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन दिन को, ६ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन और नूतन-वर्ष की पूर्व-सन्ध्या को मध्यरात्रि पर्यन्त ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन किया गया कि जिससे उच्च भाव और जोश सहित नूतन-वर्ष में प्रवेश किया जाये।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा के रविवारीय सत्संगों में दिनांक २ दिसम्बर को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण सहित, दिनांक ९ को संकीर्तन तथा ध्यानह्वसूचनाएँ और अभ्यास, दिनांक १६ को गुरुदेव के उपदेशों का स्वाध्याय, दिनांक २३ दिसम्बर को एक महात्मा द्वारा प्रवचन तथा दिनांक ३० दिसम्बर को भजन-कीर्तन इत्यादि सम्पन्न हुए। प्रतिदिन लगभग ५०० भक्तों की उपस्थिति में शाखा ने दिनांक ३० दिसम्बर से, दिनांक ६ जनवरी पर्यन्त एक विशेष सत्संग, ५ घण्टों की सभा में हरिकथा आयोजित की गयी।

पंचकूला (हरियाणा): शाखा के दैनिक सत्संग में जगद्गुरु शंकराचार्य और स्वामी रामसुखदास जी के भाष्यों के पठन सहित भगवद् गीता का स्वाध्याय किया जाता है। रविवारीय साप्ताहिक सत्संगों में दिव्य जीवन साहित्य का स्वाध्याय समाविष्ट है। प्रति शनिवार को महामृत्युंजय मन्त्र के सामूहिक जप सम्पन्न होते हैं।

सालेपुर (उड़ीसा): शाखा के दैनिक कार्यक्रम में द्विवार पूजा, प्रभातीय प्रार्थना-ध्यान, पाठ, कीर्तन इत्यादि प्रभात में एवं प्रार्थना, भजन-कीर्तन और १ घण्टे पर्यन्त अध्ययन-वर्ग इत्यादि समाविष्ट हैं। प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग होता है। श्री सुन्दरकाण्ड का मासिक पारायण दिनांक १ दिसम्बर को और श्रीमद् भगवद् गीता का मासिक पारायण दिनांक २ दिसम्बर को आयोजित किये गये। शिवानन्द-दिन के कार्यक्रम में प्रभात में पादुका-पूजन तथा एक घण्टे पर्यन्त 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का जप एवं सायंकाल में एक विशेष सत्संग इत्यादि युक्त थे। मासिक साधना-दिन १६ दिसम्बर और योगासन-ध्यान दिनांक ९ को आयोजित हुए। विशेष गतिविधियों मेंह्वह्व(१) महामन्त्र संकीर्तन संवत्सरी : ३ घण्टों पर्यन्त संकीर्तन। (२) श्री गीता जयन्ती : गीता के प्रत्येक श्लोक सहित आहुतियाँ कि जिसके सम्पुट में 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र था और उनके युक्त 'गीता-यज्ञ' एवं प्रसाद-सेवन। (३) दिनांक २३ दिसम्बर को चल पादुका-पूजा और सत्संग। (४) दिनांक ११ नवम्बर को आध्यात्मिक पर्यटन। (५) परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथि : पादुका-पूजा, प्रभात में २ घण्टों का जप और सायंकाल में एक विशेष सत्संग। दो महिनों में श्री स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल द्वारा ५४३ मरीजों के इलाज सम्पन्न हुए।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): शाखा ने प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन को विशेष सत्संग तथा रजत जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत ७ चल-सत्संग परिचालित किये। अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन के वार्षिक-दिन को ३ घण्टे संकीर्तन किया गया। संक्रान्ति-दिन को पादुका-पूजन के अनुसरण में तीन घण्टों पर्यन्त महामृत्युंजय मन्त्र के जप किये गये। विस्तारों में २ निःशुल्क आरोग्य कैम्प आयोजित हुए जिनमें १०० निर्धन मरीजों ने उपचार का लाभ लिया।

सुनाबेडा (उड़ीसा): श्रीमद् भागवतम् के स्वाध्याय सहित दैनिक सत्संगों के आधिक्य में शाखा ने प्रति गुरुवार

और रविवार को पादुका-पूजा और भगवद् गीता के अभ्यास सहित सत्संग परिचालित किये। दिनांक २३ नवम्बर से २४ घण्टों के अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन का प्रारम्भ हो कर उसके समापन में कार्तिक पूर्णिमा को नगर-संकीर्तन-यात्रा निकाली गयी। संकीर्तन-यज्ञ में अनेक शत भक्तों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के लिए अन्न-प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी। आश्रम की भूमि पर निःशुल्क मेडिकल सेवा द्वारा १०० से अधिक लोगों के उपचार किये गये।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्नह्नदैनिक प्रभातीय पूजा, श्रीमद् भागवत पाठ, महामृत्युंजय मन्त्र-जप; सायंकाल में पूजा, ४५ मिनट पर्यन्त महामन्त्र संकीर्तन, स्तोत्र-पाठ और मन्त्र-जप। द्विसाप्ताहिक सत्संग बुधवार तथा शनिवार को, शिशु-विकास सत्संग प्रति रविवार को, मंगलवार को नारायण-सेवा, चिदानन्द-दिन को १२ घण्टों का महामृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) कार्तिक पूर्णिमा को १२ घण्टों पर्यन्त महामन्त्र का अखण्ड संकीर्तन और पादुका-पूजा। (२) नवरात्रि : प्रभात में दैनिक पूजा तथा 'गॉड एज़ मदर' के स्वाध्याय सहित सान्ध्य-सत्संग। (३) महा रास पूर्णिमा : प्रभात में पादुका-पूजा और हवन तथा विशेष सान्ध्य-सत्संग।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): शाखा ने दिनांक २२ नवम्बर से दिनांक ३० नवम्बर की समयावधि में आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के विविध कार्यक्रम निम्नानुसार आयोजित कियेह्नह्न(१) एक स्कूल में ८ दिवसीय योगासन-प्राणायाम वर्गह्नह्न६६ तालीमार्थी। (२) एक कन्याशाला में ५ दिवसीय वर्ग संचालनह्नह्न२७ प्रतिभागी। (३) अन्य एक कन्याशाला में ३ दिवसीय वर्गह्नह्न७२ प्रतिभागी। (४) इसी कन्याशाला में शिक्षकों के लिए ३ दिवसीय ध्यान-वर्गह्नह्न१९ शिक्षक संलग्न हुए। वांकानेर शाखा की भेंट और एक प्रवचन। (६) दिनांक २५, २९ और ३० नवम्बर को तीन भिन्न ग्रामों से भेंट और जाहिर प्रवचन। (७) शाखा में युवानों के साथ एक मिलन-सभा।

वडोदरा (गुजरात): शाखा ने प्रति गुरुवार को सत्संग, प्रति रविवार को स्वाध्याय, होमियोपैथी और आयुर्वेदिक औषधालय और ऐक्युप्रेशर-उपचार की निज गतिविधियों का सातत्य रखा। विशेष गतिविधियों मेंह्नह्न(१) दिनांक ३० सितम्बर को और दिनांक १-२ अक्तूबर को नर्मदा-तट पर करनाली के पावन स्थान में ३ दिवसीय साधना-शिविर। आदरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने निज पावन उपस्थिति से और प्रवचनों से शिविर की शोभा में अभिवृद्धि कर भक्तों को आशीर्वादित किये। (२) तीन ही आदरणीय स्वामीजियों के शालेय छात्रों को प्रवचनों द्वारा सम्बोधन। (३) उन्हीं के द्वारा ३ जाहिर प्रवचन।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने द्वितीय और चतुर्थ रविवारों को द्विसाप्ताहिक सत्संग तथा शेष तीन रविवारों को चल-सत्संग आयोजित किये।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग (चीन): अक्तूबर २००७ की माहावधि में शाखा ने निज मासिक सत्संग दिनांक १३ह्नह्नद्वितीय शनिवार को आयोजित किया। उसमें गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों के विषय में एक प्रवचन समाविष्ट था। ५९ भक्त प्रतिभागी हुए। शेष शनिवारों को १०६ प्रतिभागियों के सहित १ घण्टा महामन्त्र का संकीर्तन हुआ। नियमित योगासन-वर्गों में १० टुकड़ियों में १३१ प्रतिभागियों ने तालीम प्राप्त की। शाखा में श्री प्रेम सान्तानी का प्रवचन आयोजित हुआ। शाखा द्वारा सह-आयोजित जाहिर प्रवचन में ४२ भक्तों की उपस्थिति थी।

पावन-स्मृति में

श्री स्वामी गुरुगोविन्दानन्द जी महाराज

इम्फाल, मणिपुर के परमादरणीय श्री स्वामी गुरुगोविन्दानन्द जी महाराज के ५ जनवरी २००८ को निधन पर गहरा दुःख व संवेदना व्यक्त करते हैं। पूर्वाश्रम में श्री निंथौजम् नडियाचान्द सिंह के नाम से जाने जाते थे। इनका जन्म १० जुलाई १९१९ को धार्मिक माता-पिता निंथौजम् गुलामजाट सिंह तथा श्रीमती कुलबती देवी के घर में हुआ। बड़े हो कर उनका आदर्श चरित्र भगवान् के प्रति प्रेम व श्रद्धा से जगमगा उठा। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के सम्पर्क में आने से पहले ही वे सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के मिशन हेतु डिवाइन लाइफ सोसायटी, इम्फाल के सचिव के रूप में सेवा कर रहे थे। २५ अप्रैल १९९७ को उन्होंने संन्यास दीक्षा ली। २० वर्ष की समर्पित सफल सेवा करने के उपरान्त वे ३१ अगस्त १९९८ को इस शाखा के अध्यक्ष पद पर प्रोन्नत हुए। तत्पश्चात् अखिल मणिपुर डिवाइन लाइफ सोसायटी शाखाओं के अध्यक्ष बने।

मणिपुर के कोने-कोने में सत्संग व शाखाओं की बैठकें कर वे गुरुदेव की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के साधन बने। उन्होंने मणिपुर में ऐसा आध्यात्मिक वातावरण व उत्साह पैदा कर दिया कि परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने दो बार १९८५ और १९९५ में मणिपुर का भ्रमण किया।

परमादरणीय स्वामी जी महाराज ने अपने गुरु के आदर्शों के प्रति पूर्ण समर्पण किया। इसी कारण उन्होंने अपने आध्यात्मिक स्वभाव को प्रकट किया। वे सबको प्रेम व आलिंगन करते थे। उनका ऐसा स्वभाव गुरुदेव की शिक्षाओं तथा गुरुदेव के प्रति उनका अन्तरंग प्रेम प्रदर्शित करता है। उन्होंने गुरुदेव की पुस्तकों का मणिपुरी भाषा में अनुवाद भी किया है।

मणिपुर के भक्त श्री स्वामी गुरुगोविन्दानन्द जी महाराज के प्रति अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान करते थे। अतः उन्होंने स्वामी जी के सम्मान में डिवाइन लाइफ सोसायटी की इम्फाल शाखा के ध्यान-कक्ष में उनकी समाधि स्मारक बनाया जिसमें वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ भक्तों के विशाल समूह की उपस्थिति में उनके शरीर को ६ जनवरी २००८ को समाधिस्थ कर दिया।

हम पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करते हैं कि उनकी कृपा से श्री स्वामी गुरुगोविन्दानन्द जी महाराज की आत्मा को परम शान्ति और परमानन्द प्राप्त करें!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन-स्मृति में

श्री एम. गोविन्दराजुलु गारु

श्री एम. गोविन्दराजुलु गारु ने ८ जनवरी २००८, मंगलवार, २.३० पूर्वाह्न विजग, आन्ध्र प्रदेश में अपने पार्थिव शरीर को त्याग दिया। वे परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज और परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के परम शिष्य थे।

इन दोनों गुरुओं के पदचिह्नों पर चल कर उन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन को ढाला। पाँच दशकों तक वे बहरामपुर डिवाइन लाइफ सोसायटी शाखा के निर्विरोध अध्यक्ष रहे। उन्होंने प्रारम्भ में अपने निवास में सप्ताह में एक बार रविवार को सत्संग, गुरुपादुका पूजा तथा भण्डारा (गरीबों को भोजन-प्रसाद) के साथ सत्संग कर डिवाइन लाइफ के सन्देश के प्रचार-प्रसार की सेवा की।

गुरुदेव से प्रार्थना है कि उनकी कृपा से श्री गोविन्दराजुलु गारु को परम शान्ति और परमानन्द मिले!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन-स्मृति में

श्री रामास्वामी

बड़े दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि अपने आश्रम के श्री रामास्वामी का अचानक और अप्रत्याशित निधन दिनांक २०-१-२००८ की प्रातःबेला में हो गया। श्री रामास्वामी किसी गम्भीर रोग से ग्रसित नहीं थे। बड़े-सबेरे वे नजदीक की एक दूकान पर सुबह की चाय पीने गये, अचानक उन्हें प्यास लगी और वे ढेरों ठण्ढा पानी पी गये। ऐसी हालत में उन्हें आश्रम में लाया गया और उन्हें आराम करने दिया गया। कुछ देर बाद उन्होंने अन्तिम साँस ली।

एक सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठान की अच्छी आय की नौकरी त्याग कर श्री रामास्वामी गुरुदेव के आश्रम में सन् ७० के प्रारम्भिक वर्षों में आये। वे एक अत्यन्त कुशल आशुलिपिक और पूर्णता की सीमा तक के आशुलिपि-टंकक थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक ब्रह्मलीन पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज, तत्कालीन महासचिव, दिव्य जीवन संघ की सन्तोषप्रद और सराहनीय सेवा की। सन् २००१ में, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की महासमाधि के बाद, वे पूज्य स्वामी श्री निर्लिप्तानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष और वर्तमान महासचिव श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की सेवा करते रहे।

श्री रामास्वामी एक निष्कपट व्यक्ति थे। वे पुरोहित-परिवार से आते थे। उनका जीवन सादा और आडम्बर रहित था। वे कभी किसी वस्तु की माँग नहीं करते थे। वे नित्य सैर पर जाया करते थे। वे ज्यादा लोगों से मिलते-जुलते नहीं थे और व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट नहीं करते थे। वे अपने नियत कार्य के प्रति समर्पित और अपने में ही मग्न रहते थे।

उनकी मृत्यु से आश्रम ने एक अच्छा कार्यकर्ता खो दिया है। उनके स्तर का दूसरा व्यक्ति खोज पाना अत्यन्त कठिन है। हम सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं कि वे श्री रामास्वामी की आत्मा को परम शान्ति और सद्गति प्रदान करें!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

विशिष्ट उद्घोषणा

योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी का हीरक जयन्ती समारोह

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, डाकघरह्न शिवानन्दनगर (ऋषिकेश) में दिनांक २९ जून से ३ जुलाई २००८ के बीच योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी अपनी हीरक जयन्ती मनाने जा रही है। एकाडेमी के भूतपूर्व विद्यार्थियों एवं अस्थायी प्राध्यापकों को इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए हार्दिक निमन्त्रण है। हीरक जयन्ती की यादगार में एक स्मारिका का प्रकाशन प्रस्तावित है। एकाडेमी के अस्थायी प्राध्यापकों/स्वामियों से हमारा अनुरोध है कि वे आधारभूत योग-वेदान्त पाठ्यक्रम एवं उनके एकाडेमी में प्रवास, तत्सम्बन्धी उनकी पुरानी यादें, अनुभूति एवं विचारों पर आधारित अपने अमूल्य लेख भेजने की कृपा करें। विद्यार्थियों से भी अनुरोध है कि वे अपने प्रशिक्षण से सम्बन्धित उनके द्वारा ली गयी तस्वीरें जैसे भाषणों, कर्मयोग एवं योगासन, उत्सवों में भाग लेने सम्बन्धित, निःशुल्क नेत्र-यज्ञ, भोजनालय में सेवा, गुरुदेव कुटीर, गोवर्धन धाम के आस-पास, श्री दुर्गा मन्दिर एवं श्री दत्तात्रेय मन्दिर परिसर, सत्संग भवन आदि की, हो तो उसे रजिस्ट्रार, योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के पास १५ मार्च २००८ तक भेज दें।

जो हीरक जयन्ती समारोह में भाग लेना चाहते हैं, वे निम्न पते पर सूचित करें :

महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पत्रालय : शिवानन्दनगर,
जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन : २४९१९२

उसमें उनके आश्रम में रहने की प्रस्तावित तिथियाँ लिखें, ताकि आश्रम में उनके आवास की व्यवस्था की जा सके। यह सूचना ३० अप्रैल २००८ तक महासचिव को प्राप्त हो जाये।

विद्यार्थी अपने पत्राचार में अपना नाम, वर्तमान पता, फोन नम्बर, पाठ्यक्रम संख्या और उन महीनों के नाम लिखें जिसमें उन्होंने भाग लिया था।

एकाडेमी के सभी भूतपूर्व विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों का हीरक जयन्ती समारोह में स्वागत है।

प्रेम और ॐ सहित

१९ नवम्बर २००७ **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

शान्ति कोई दूर की वस्तु नहीं है। जब तक हम उसे बाहर खोजते रहते हैं, केवल भटकते ही रहते हैं। जब हम अन्तर्मुख हो कर स्वयं में ही शान्ति की खोज करने लगते हैं, तो हमें धीरे-धीरे शान्ति का अनुभव होने लगता है। शान्ति का सीधा सम्बन्ध हमारे हृदय से है; इसलिए अन्तर में ही शान्ति की खोज करें। **स्वामी चिदानन्द**

Particulars under Section 19D Sub section (b) of the Press and Registration of Books Act:

1. Name of the Publication: . . . . Divya Jeevan
2. Place of Publication: . . . . Yoga Vedanta Forest Academy Press Shivanandanagar, Uttarakhand
3. Publisher's Name: . . . . Swami Vimalananda
4. Periodicity of Publication: . . . . Monthly
5. Editor's Name: . . . . Swami Nirliptananda
6. Nationality: . . . . Indian
7. Address: . . . . The Divine Life Society, P.O. Shivanandanagar-249192 Distt. Tehri-Garhwal, Uttarakhand
8. Language: . . . . Hindi
9. Owners: . . . . The Divine Life Trust Society, Registered under the Societies' Registration Act of the Government

I, Swami Vimalananda, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Swami Vimalananda

1st March, 2008 PUBLISHER

सूचना

श्री रामनवमी महोत्सव

श्री रामनवमी का पवित्र त्योहार भगवान् श्री विश्वनाथ मन्दिर में **१४ अप्रैल २००८** को मनाया जायेगा। **७ अप्रैल से १४ अप्रैल २००८** तक पवित्र श्री राम-मन्त्र का सामूहिक जप होगा। अन्तिम दिन लोक-कल्याण और विश्व-शान्ति तथा भक्तों के वैयक्तिक कल्याण के लिए विशेष संकल्प से यज्ञ किया जायेगा। अर्चना के साथ सायंकाल को आश्रम के सत्संग में एक विशेष प्रार्थना सभा भी होगी। जो भक्त श्री रामनवमी महोत्सव में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे कृपया **'महासचिव, दिव्य जीवन संघ, पत्रालय शिवानन्दनगर, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२'** से सम्पर्क करें।

—दिव्य जीवन संघ

INFORMATION ABOUT BOOKS

Now Available

1. Bazaar Drugs . . . . Swami Sivananda . . . . Rs. 40/-
2. Problems of Spiritual Life. . . . . Swami Krishnananda . . . . Rs. 60/-
3. Mundaka Upanishad . . . . Swami Krishnananda . . . . Rs. 35/-
4. Life and Works of Swami Sivananda Vedanta (Jnana Yoga). . . . . Rs. 180/-

Under Print

1. Treasure of Teachings . . . . Swami Sivananda
2. Upanishad for Busy People . . . . Swami Sivananda
3. The Principal Upanishads . . . . . Swami Sivananda
4. Mind—Its Mysteries & Control. . Swami Sivananda
5. Yoga Meditation and Japa Sadhana Swami Krishnananda
6. Lessons on the Upanishad. . . . . Swami Krishnananda
7. अध्यात्मविद्या . . . . स्वामी शिवानन्द

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क . . . . रु. १५०/-
   प्रवेश-शुल्क . . . . रु. ५०/-
   सदस्यता-शुल्क . . . . रु. १००/-

२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक). . . . . रु. १००/-

३. नयी शाखा खोलने का शुल्क* . . . . रु. १०००/-
   प्रवेश-शुल्क . . . . .रु. ५००/-
   सम्बद्धता-शुल्क . . . . .रु. ५००/-

४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) . . . . रु. ५००/-

५. आजीवन सदस्यता-शुल्क . . . . रु. ३,०००/-

६. संरक्षकता-शुल्क . . . . रु. १०,०००/-

⇨ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

* नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।